॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे परमदेव! तू कल्याण करने वाला है। तू हमारा ही नहीं सँसार का कल्याण करने वाला है। आज सँसार में प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या के हृदय में उस उज्ज्वलता को दें जो आपने सृष्टि के प्रारम्भ में प्रत्येक वेद मन्त्र द्वारा हमें प्रेरणा दी है। उस प्रेरणा को पुनः से जागृत कर। विधाता! आपने सृष्टि का निर्माण किया और सर्वप्रथम मानव के लिए ज्ञान का स्त्रोत दिया, उस आनन्द के स्त्रोत को आज भी दे। किसको दे? महान् पात्रों को दे। आज हमारे हृदय को पवित्र बना, जिससे हम सँसार में उज्ज्वल बनें विधाता! जब आपकी कृपा होगी तो हम आपकी दया के पात्र बनेंगे। हे भगवन्! तू दया कर और इतनी दया कर कि हमारी आत्मा के द्वारा कोई दोष न आए। विधाता! जब हमारी आत्मा के द्वारा नाना प्रकार के दोष आ जाएँगे, तो हमारा जीवन, जीवन न रहेगा। प्रभु! दया कर।

हे प्रभु! हम कैसे अभागे हैं सँसार में। मैं तो भगवन्! वह कर्म करना चाहता हूँ जिस कर्म को करके प्रभु! मैं तुम्हारी गोद में आ जाऊँ। भगवन्! मैंने आज से पूर्व काल में जो पाप किया है उसे क्षमा करो। आज मैं क्षमा चाहता हूँ। प्रभु! तू आज मुझे अपना और अपनाकर अपनी गोद में ले।

हे भगवन्! तू यज्ञ को देने वाला है, प्रेरणा देने वाला है, भगवन्! वह प्रेरणा दो, जिससे हम अपना और इस सँसार का कल्याण कर सकें। जब विधाता की दया होती है तो हमारी आन्तरिक भावना उज्ज्वल और पवित्र हो जाती है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 571 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 646
वर्ष : 48 44 समग्र वर्ष : 54

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. माता-पिता	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-23
4. आत्मा के स्वरूप (द्वितीय-भाग)	पूज्यपाद-गुरुदेव	24-39
6. ऋषियों के उद्‌गार		40
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		41-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

माता-पिता

सुन्दर मन्त्र पाठ विस्तार से – कुछ आवाज कम व अधिक।

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की ज्ञान और विज्ञान का वर्णन आता रहता है ज्ञान और विज्ञान की जो अनुपम प्रतिभा है वह मानव को अनुपम बना देती है क्योंकि अनुपमता उसमें मौलिकत्व रहने वाला है जब हम यह विचार-विनिमय करते हैं कि हमारा जो हृदय है उसका जब तक तारतम्य कर नहीं लेते समन्वय नहीं हो पाता बेटा! जब तक हमारे जीवन का उत्थान भी नहीं हो पाता। हमारे यहाँ प्रायः नाना प्रकार की अज्ञानमयी प्रतिभा रमण करती रहती है अज्ञान में उसको विडम्बना कहते हैं वह मानव विडम्बनित होता रहता है जिसके द्वारा ज्ञान नहीं होता मुझे बेटा! परम्परा का समय स्रण आता रहता है जब यहाँ मानव मृगराजों के मध में विराजमान हो जाता है प्रभु के आङ्गन में विराजमान हो जाता है उस समय मानव का हृदय भिन्न-भिन्न होता है क्योंकि भयभीत मानव का उस स्थन में वही होता हैजब वह अपने में अहिंसावादी बन जाता है तो वह भयभीत नहीं होता परन्तु भय तो जब होता है जब हिंसक हो तो विचार-विनिमय करना है हमें अहिंसावादी बनाता है संसार में अंहिसा के भिन्न-भिन्न प्रकार की रूप माने गयी हैं आज मैं उन स्वरूपों का वर्णन तो करने नहीं आया हूँ परन्तु इनका संक्षिप्त परिचय देना चाहता हूँ। संसार में जब यह विचारना चाहता है मानो कि मैं चिन्तन करना चाहता हूँ तो उसके द्वारा उसकी

मौलिक सूत्रता भी नहीं रह पाती क्योंकि मानव का जो सुकृत है वही तो जीवन कहलाता है परन्तु जब सुकृत चला जाता है तो मानो देखो अराज्य मृत्यु ..... बेटा! ये सुकृत ऐसी वस्तु है जिससे हम अपने जीवन को उन्नत बना सकते हैं हम अपने पवित्र आनन्दमयी वेदी पर विचारामान हो जाते हैं बेटा! एक समय का काल मुझे स्मरण रहता है विचार-विनिमय करना था सुकृत के ऊपर परन्तु महर्षि जमदग्नि आश्रम में महर्षि जमदग्नि आश्रम से उसके निकट बेटा! अश्वनी कुमारों के यहाँ आयुर्वेद के ऊपर बहुत-बहुत विचार-विनिमय होता रहता था हमारे यहाँ परम्परा से विद्या रही है हमारे आयुर्वेद आचायों ने भी इसका मन्थन किया है क्योंकि मस्तिष्क को दूरी कर देना मस्तिष्कों को वहाँ ज्यों का त्यों उसको सुगठित कर देना ये अश्वनी कुमारों का एक अनुपम ..... जिससे बेटा! मेरे प्यारे महानन्द जी! ने कई काल में आधुनिक काल की चर्चा प्रगट कराते हुए कहा था क्या ये संसार आधुनिक काल का ये विज्ञान है मैंने आयुर्वेद के आधार से बहुत उज्ज्वल बन गया है मैंने अपने प्यारे ऋषि ये ये कहा था हे पुत्रवत्! संसार में जब आयुर्वेद के ऊपर विचार-विनिमय कोई भी करने लगता है उसमें उसकी प्रतिभा महान बन जाती है परन्तु जब आयुर्वेद अनुसन्धान नहीं करता सुन्दर-सुन्दर वनस्पतियों को नहीं विचार-विनिमय करते, ये हमारा जीवन न होने के तुल्य बन जाता है मानो उसकीहमें जानकारी नहीं हो पाती हम यह स्वीकार कर लेते हैं कि हमारा जो जीवन है वह नैकृतिक है तो मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मैं इन वाक्यों को अधिक नहीं उच्चारण करूँगा कि जीवन ..... उच्चारण करने वाला ये था बेटा! महर्षि मानो अश्वनी कुमारों के यहाँ बेटा! सर्व सभा होने वाली थी उस सभा में बेटा! विचार-विनिमय हो रहा था क्या वास्तव में मानव का उद्देश्य क्या है? बेटा! बहुत चिन्तन विचार हृदय में होता रहता है क्योंकि संसार में जितनी भी वस्तु हैं उन सभी का नाम वनस्पति माना जाता है सभी को मुनिवरों! देखो औषध कहा जाता है उनको आपो धृत कहा जाता है वैसे जी में आपो होता ही है क्योंकि जल जब आपो कहते हैं तो उसमें सम्पन्न सर्वतों का मिश्रण

होता है परन्तु वह जो मिश्रण होता है वह मानव के जीवन को मिष्ट बनाने वाला है यही बेटा! देखो प्रकृति को भी अमृतमय बना देता है और प्रबल बना देता है हमें यह विचार-विनिमय करना है कि हम उस महान औषधियों के ऊपर विचार-विनिमय करते चले जाएँ यहाँ हमारा जीवन एक महानवता का अध्ययन करता जाए। मेरे प्यारे ऋषिवर! जब हम प्रकृति विज्ञान के विषय में विचार-विनिमय करने लगते, वैदिक उपदेश हमें क्या दे रहा है आज मेरे प्यारे महानन्द जी! ने मुझे पूर्व काल में वर्णन कराया मैंने कुछ वार्ता भी प्रगट की चन्द्र मण्डल के ऊपर परन्तु मण्डल इत्यादियों के ऊपर तो मेरा उसमें अभी तो उसमें अधिकता और मेरा मन का जो कृत है वह अधिक इसमें रमण नहीं कर रहा परन्तु केवल वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यही है कि मानव चन्द्रमा की यात्रा करने, मानो देखो उन परमाणुवाद में जितना प्राप्त हो जाता है क्या ज्ञान-विज्ञान को हम अपने आङ्गन में ले जाना चाहते हैं क्योंकि हमारे यहाँ अश्वनी कुमारों ने मिलकर बेटा! ऐसा अनुपम काल तुम्हें स्मरण होगा महात्मा दधिची के मस्तिष्क को बेटा! हृदय दूरी कर दिया और अश्व के मस्तिष्क को स्थिर कर दिया और अश्व के मुखारबिन्दु से ही अश्वनी कुमारों ने ब्रह्म का उपदेश लिया था परन्तु वही निर्णय देखो ..... तो वाक्य ये उच्चारण करने का अभिप्राय ये बेटा! क्या हमारे यहाँ एक अनुपम सुन्दर विद्या परम्परागतों से चली आ रही है आज मैं इसके ऊपर विचार-विनिमय करना चाहता हूँ, जो अनुपम विद्या है ये लुप्त न हो जाए परन्तु वास्तव में विद्या लुप्त नहीं होती उसका रूप रहता है प्रायः दूसरे रूपों में हमें प्रतीत होने लगती है परन्तु उसका अभाव नहीं होता मानो उसका वह नष्ट नहीं होती मानो वह परम्परा तो बनी ही रहती है वह किसी भी रूप में बनी रहे। हमें उसकी रूपरेखा को बनाना है। हमें अपने जीवन में निराश नहीं होना है अपने जीवन में ही ये नहीं दर्शाना है क्या आर्य संसार में नहीं पनपा। मेरे प्यारे ऋषिवर! जब हम बहुत ही अनुसन्धान की दृष्टि में जाते हैं तो मानो वह औषधियों के प्रति ये जो नाना प्रकार की औषधि हैं अन्न से ले करके जिसके द्वारा प्राणों की रक्षा हो सके

प्राण अपना सुचारू कार्य कर सकें मुनिवरों! देखो तभी तक हमारे यहाँ मानो औषधियों का पान किया जाता है अन्न भी एक प्रकार की औषध है परन्तु उसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए सदुपयोग में लाने के लिए हमें सदैव विचार-विनिमय करने की आवश्यकता रहती है तो बेटा! देखो आज का ये हमारा वाक्य क्या कह रहा है, हमारी ये प्रतिभा क्या कह रही है, आज का ये मानव और देव-कन्याएँ बेटा! सभी अपने-अपने आङ्गन में देखो प्राङ्गण प्रहे मानो देखो अपने नाना प्रकार की अपनी प्राङ्गण में परणित रहती है। देखो बिना ज्ञान के ज्ञान होना चाहिए ज्ञान की प्रतिभा होनी चाहिए हमारे यहाँ बेटा! मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें प्रगट कराया था क्या मुदग्ल गौत्र में उत्पन्न होने वाली कन्या बेटा! पाँच वर्ष की ब्रह्मवेत्ता बन गयी थी परन्तु देखो चाक्राणी गार्गी भी बेटा! देखो बारह वर्ष की ब्रह्मवेत्ता बनी। परन्तु देखो यहाँ ब्रह्मवेत्ता बनना है ब्रह्म के ऊपर विचार-विनिमय करना है क्योंकि वह ब्रह्म का विचार ऐसा विचार है जो मानव के हृदय को मानो प्रसन्नवत् बना देता है और कोई विचार ऐसा नहीं है जो मानव को प्रसन्न बना सके क्योंकि मानव संसार में परणित होता है नाना प्रकार की त्रुटियों में लगा रहता है। मुनिवरों! देखो एक-दूसरे की त्रुटियों में लगा रहता है। जब ब्रह्म का विचार आता है तो ब्रह्म के विचार में ही बेटा! मानो देखो नमः हो जाता है नतमस्तक हो जाता है। आज हम सभी को ब्रह्म के आगे नतमस्तक होना है क्योंकि ब्रह्म ये कहता है जो ब्रह्मे उसमें बेटा! सर्व जगत समाहित हो रहा है। आज हमें ब्रह्म के ऊपर विचार-विनिमय करना है जैसे मन की प्रतिभा है मान को प्रतिभा के ही आङ्गन में बेटा! इन्द्रियाँ ओत-प्रोत हो जाती हैं मानो देखो वहीं तक नहीं ये सर्वत्र प्रकृति का अपना व्यापार है प्रकृति में इतना आवागमन हो रहा है मानो ये प्रकृति हमें भिन्न-भिन्न रूपों में परणित हो रही है ये सब उस मेरे प्यारे मनीराम! का ही तो कार्य है वह वही मनीराम है जो मानव के जीवन का विभाजन कर देता है बेटा! जो नाना चन्द्र मण्डलों का भी विभाजन करने लगता है आज हमें उस महान प्रतिभा को जानना चाहिए ये प्रतिभा हमारे जीवन में उद्बुद्ध हुई है। जैसा

मैंने पूर्व काल में बेटा! इसकी विवेचना की है। आज भी मुझे स्मरण आती चली जा रही है मुनिवरों! देखो यहाँ महर्षि गौतम इत्यादियों की विवेचना जब आती है महात्मा वरुण की विवेचना आती है तो उस समय मुझे यही प्रतीत होता है कि हम कहाँ जाएँ नक्षत्रों ऊपर वार्त्ता आती है। आज प्रायः विचार-विनिमय होता रहता है क्या हम संसार में उत्तम बनना चाहते हैं ना तो विज्ञान की आवश्यकता है विज्ञान प्रत्येक मानव की प्रतिभा में रहना चाहिए क्योंकि बिना विज्ञान के मानव संसार में कोई कार्य कर ही नहीं पाता मेरे प्यारे ऋषिवर! मुझे एक वाक्य स्मरण आता रहता है एक समय बेटा! अश्वनी कुमारों के, अश्वनी कुमारों ने बेटा! महात्मा जमदग्नि आश्रम में सभा की, उस सभा में केवल एक ही विचार-विनिमय होना था कि संसार में मानो देखो सन्तान उत्पत्ति कैसी होनी चाहिए सन्तान के लिए हमें क्या-क्या कार्यक्रम करना है जिससे हम संसार में वास्तव में कुछ अध्ययन करके हम भी वास्तव में मुनिवत् कहला सकते हैं। मेरे प्यारे ऋषिवर! उस सभा में आदि ऋषि विराजमान हो गए समय मिला तो बेटा! ..... जाने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है मुझे बेटा! वह सभा ऐसी स्मरण आती रहती है जैसे आज भी वह सभा हुई हो मेरे प्यारे ऋषिवर! देखो उस सभा हुई हो मेरे प्यारे ऋषिवर! देखो उस सभा में महर्षि मुदग्ल गौत्र में उत्पन्न होने वाले मानो शाडिल्य ऋषि महाराज को क्या शाडिल्य ऋषि महाराज को उसका सभापति बनाया गया जब सभापति बन गए सभापति बन जाने के पश्चात् बेटा! नाना ऋषियों के विचार-विनिमय होना शुरू हुआ बेटा! देखो महर्षि रेवक ने शाण्डिल्य से प्रश्नों की बौछार की उन्होंने कहा प्रभु! विचार क्या है? उन्होंने कहा विचार ये है कि संसार में मानो देखो यह गृहज जो आश्रम है ये धोखा है मानो गृह आश्रम का क्या कर्त्तव्य है? मुनिवरों! देखो विचार-विनिमय होने लगा उस समय ऐसा कहा जाता है चाक्राणी गार्गी ने भी यह कहा कि मैं भी इसको जानना चाहती हूँ परन्तु उन्होंने कहा बेटा! महर्षि शाण्डिल्य मुनि से ये प्रश्न किया क्या महाराज मैं ये जान सकती हूँ क्या संसार में मानो देखो हमारे जीवन का मेरा जो जन्म हुआ है मैं अपनी

माता के गर्भ स्थलमें पनपा हूँ क्या गर्भ स्थल में भी कया कोई नक्षत्र से या प्रकृति के आवेश के समीप होते हैं अथवा नहीं उस समय शाण्डिल्य जी ने कहा मैंने तो आयुर्वेदों का अध्ययन करके ऐसा जाना है क्या मानव को हमारे यहाँ देखो षोडष रात्रि होती हैं षोषड रात्रि होती हैं षोषड रात्रियों में देखो षोषड प्रकार के नक्षत्र होते हैं। मानो प्रायः नक्षत्र का प्रायः मानो देखो रात्रि से सम्बन्ध रहता है। इसी प्रकार जब मेरी प्यारी माता के गर्भ स्थल में मानो देखो सुकृत जाता है जब पुरुष का सुकृत जाता है सुकृत के जाने मात्र से ही बेटा! देखो वहाँ मानो देखो गर्भ की स्थापना हो जाती है जब गर्भ की स्थापना होती है जब स्थापित हो जाता है। मानो प्रारम्भिक आत्मा का प्रविष्ट होता है माता के गर्भ में उसी समय मानो ऐसा कहा गया है देखो उकसा पुष्प प्रतिबिम्ब रहता है पुष्प नक्षत्र और जेठाय नक्षत्र दोनों की धारा उसमें मिश्रण होती है जब मानो देखो वह बालक संसार में एक महानता को प्राप्त होता रहता है अन्तरिक्ष में जो रमण करने वाले जो पवित्र आत्मा हैं वही आत्मा देखो माता के गर्भ स्थल में समूचे प्राण बेटा! देखो उसका प्रादुर्भाव मानो वही उसकी ..... लगती है। ऐसा हमारे यहाँ क्योंकि आचार्यों ने बेटा भिन्न-भिन्न प्रकार के आवेशों में आ करके विचार-विनिमय किया है और उन्होंने कहा है चर्चा करने के पश्चात् कि माता को ये विचार-विनिमय करना है माता के विचार पितर के विचार उन विचारों से ही मानो देवी के ऊपर बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार की अवेदना का ही एक समृहत्व उत्सव होता है। आचार्य कहता है, ऋषि कहता है कि हमें तो वास्तव में ही ये विचार-विनिमय बहुत ही अनुसन्धानपूर्वक करना है बेटा! देखो प्रायः मानव जब अनुसन्धान की वेदी पर जाता है मेरी प्यारी माता जब अनुसन्धान की वेदी पर जाती है तो उस समय ये भी प्रतीत होता है क्या मेरा जीवन तो प्रत्येक देवता से पिरोया हुआ जीवन है जैसे मुनिवरों! देखो यज्ञशाला में अशुद्ध सामग्री अर्पित करने से बेटा! देखो जब गन्ध हो जाती है उसी प्रकार हे माता! तेरी जो पवित्र वेदी है मानो यदि इसमें उज्य सत्र प्रवहाः तमे वाक प्रेही। मानो देखो अशुद्ध हो गया सूत्र चला गया तो

तेरा जो पुण्यवत् है नष्ट हो जाएगा। मेरे प्यारे ऋषिवर! मैं इस सम्बन्ध में अधिक विचार-विनिमय करने नहीं आया हूँ विचार केवल यह है वाक्य को बेटा! विस्तारपूर्वक इसलिए नहीं प्रगट करना चाहता हूँ क्योंकि मेरा आज का ये वाक्य तो नहीं था मैं तो केवल अपने जीवन की एक अनुपम धारा जो मैंने बेटा! श्रवण किया उस वाक्यों को प्रगट कराता चला जा रहा का माता ने बड़े सुन्दर भाव से हे माता! तू बड़ी सौभाग्यनी है जपुत्रों सम्भम्बे आपनोति अश्वति लोकाम् सम्भवति पिता महा। मानो देखों जब तेरी वेदी से एक पुत्र का जन्म होता है परन्तु जन्म लेने के पश्चात् उसकी सुक्रिता मानो तेरे सुकृत को वह पुत्र जब हनन कर देता है तेरा सुकृत नष्ट हो जाता है। माता को वास्तव में विज्ञानवेत्ता नहीं की यदि विज्ञानवेत्ता होती तो ना राम और कृष्ण जैसे बालक जब कणाद और गौतम जैसे बालकों का नाम महान पुरुषों का जन्म होता है तो माता की प्रतिभा उससे पूर्व बन जाती है तो मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मैं ये वार्त्ता प्रगट करने नहीं आया हूँ केवल वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि मानव को अपने सुकृत के ऊपर विचार-विनिमय करना है संसार में बेटा! जब विज्ञान होता है क्योंकि विज्ञान की प्रतिभा मानव के समीप होनी चाहिए आज हमारे प्यारे महानन्द जी! जब मुझे ये वर्णन कराते हैं कि आज का विज्ञान बड़ा प्रबल है मैंने एक समय अपने प्यारे ऋषि से एक वाक्य कहा था हे पुत्रवत्! क्या इस प्रकार का विज्ञान है क्या आयुर्वेद का विज्ञान भी है या नहीं उस समय उन्होंने कहा कि आयुर्वेद का विज्ञान नहीं है जब तक मेरी पवित्र माता-पिता आयुर्वेद के विज्ञानवेत्ता नहीं बनेंगे तब तक हमारा राष्ट्र, हमारा समाज किसी भी काल में उन्नत नहीं बन सकेगा क्योंकि उसका उन्नत बनना हमारे जीवन के लिए बहुत अनिवार्य है। हमारा जीवन तो वेदी में पनपता है आज हम विज्ञान के युग में जाने के लिए तत्पर हो जाते हैं मुझे स्मरण आता रहता है मेरे प्यारे महानन्द जी! ने मुझे वर्णन कराते हुए कहा था कि विज्ञानवेत्ता बनना हमारे लिए बहुत अनिवार्य है मानो विज्ञानवेत्ता बनना बेटा! महान कार्य नहीं है परन्तु जब शारीरिक विज्ञान जब मानव देखो ...

. विज्ञान मानव के समीप होता है उसका क्रियात्मिक होता है उसी काल में बेटा! समाज और राष्ट्र उन्नत बना रकते हैं आज मैं बेटा! विज्ञान के ऊपर चर्चा कर रहा हूँ जो माता-पिता का विज्ञान है तो मुनिवरों! देखो विधिवत् विज्ञान है मानो देखो पवन की रात्रि में गर्भास्थिति होने से शुक्रत देने से बेटा! प्रकृति जीवाणु का जन्म होता है पवन से रात्रि के प्रहार से बेटा! पवन से नक्षत्र प्रवाह से पवन का उस आत्मा माता के पुत्र में परणित हो जाता है बेटा! ये सब अनुसन्धान का विषय कहलाया गया है क्योंकि आपो से ही हमारा सम्बन्ध है हमारे यहाँ आचार्यो ने कहा है बेटा! जब एम समय महर्षि शाण्डिल्य जी से एक बार कहा गया क्या महाराज देखो आपो क्या है? उन्होंने कहा कि इतना देने वाला समाज से सभी को आपो कहा जाता है। मानो देखो जितना भी आपो शक्तिशाली होता है उतना मुनिवरों! देखो वह आपो की जो प्रतिष्ठा होती रहती है। परन्तु इतना वह केवल रह जाता है उतनी ही उसकी प्रतिष्ठा सूक्ष्म होती रहती है तो मुनिवरों! देखो जो भी वस्तु निरत्व मानो आपो कहलाया जाता है नेत्रों में भी आपो की प्रतिभा है मुनिवरों! देखो समुद्रों में भी आपो है सूर्य की किरणों में भी आपो की प्रतिभा रमण कर रही है चन्द्रमा की कान्ति भी आपो से उत्पन्न आपो से मुनिवरों! ये जो आपो है आज हमें इसे जानना है क्योंकि आपो ही माता के गर्भ स्थल में जाने के पश्चात् बेटा! पुत्रवत् बन जाता है वही आपो है जो माता के गर्भ स्थल में देखो बेटा! पुत्रवत् बन जाता है पुत्रवत् बन जाने के पश्चात् परन्तु हमें विचारना है क्या वह आपो हमारा कितना शक्तिशाली होना चाहिए उस आपो में कितना अनुपम बल होना चाहिए मेरे प्यारे ऋषिवर! हमारे यहाँ कौन-सा ऋषि बेटा! इसके ऊपर विचार-विनिमय नहीं ढूँढ़ता रहता परन्तु उसका विचार मानो ये सन्तोष का विषय होना चाहिए सङ्कोच नहीं होना चाहिए मानव जो सङ्कोच से रहित होता है मानो अपने हृदय से हृदय के पापो से रहित हो करके बेटा जितना विचार होता है। उस विचार में महान सुकृत होता है। तो मेरे प्यारे ऋषिवर! आपो के ऊपर विचार-विनिमय करना है क्योंकि आपो ही प्राण के साथ में रमण करने

वाला है यदि आपो नहीं होगा तो प्राण की भी शुद्धि नहीं हो पाएगी मेरे प्यारे ऋषिवर! जब मानव सांस पर सांसों की गति बनती है उसे आपो ही प्राण देता है वह सांसों को मुनिवरों!

जब प्राण होगा तो बेटा! संसार भी सुकृत नहीं बनेगा और जब सुकृत नहीं होता तो नाभि चयन प्राण से निकलकर मानो जहाँ तक चला जाएगा वहाँ तक सुकृत बढ़ता चला जाएगा मेरे प्यारे ऋषिवर! जहाँ अग्नि को अग्नि प्रदीप्त हो रही है अग्नि से ..... अग्नि महान उज्ज्वल हो रही है अग्नि में बेटा! देखो जल का सुकृत नहीं है, जल का सुकृत सूक्ष्म होने के नाते मुनिवरो! देखो वह मानव को बहुत ..... इसी प्रकार मानो प्राण में भी जल का सुकृत नहीं होता तो बेटा! देखो मानव के शरीर को भस्म कर सकता है मेरे प्यारे ऋषिवर! इसलिए हमें विचार-विनिमय करना है कि हमारा जो जीवन है हमारा जो आपो है वही हमारा जीवन है क्योंकि सूत्र से सूत्र उसे कहा जाता है। आज हमें यह विचार-विनिमय करना है जिससे हमारे जीवन की प्रतिभा एक महान महानता से सुगठित हो जाए यहाँ मुनिवरों! देखो सुकृत होता है वहीं तो मानव का सुन्दर होता है। मेरी प्यारी माता! अपने आपो को सुन्दर बना क्योंकि जो आपो है उसी में तो जीवन है उसी में ही तो मुनिवरों! देखो मानव का सुकृत विराजमान रहता है मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मैं इस वाक्य की विवेचना को विलम्ब नहीं देने जा रहा हूँ वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा क्या है? क्या हम इस महान देखो पुण्यवेदी पर विज्ञानवेत्ता बनते चले जाएँ क्योंकि विज्ञान को ही हमारा कर्त्तव्यबद्ध कहलाया जाता है क्योंकि यदि हमारे द्वारा ज्ञान नहीं होगा तो हमारा जीवन नहीं होगा क्योंकि विज्ञान तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार होता है जन्म से विज्ञान के युग में आते हैं क्योंकि जो भी हम दृष्टिपात करते हैं उस विज्ञान का भी कुछ जिज्ञासा रहती है एक मानव मधुर-मधुर चर्चा कर रहा है। परन्तु उसके जानने की कितनी उत्कृष्ट इच्छा होती है। एक मानव

चन्द्रमा की यात्रा की चर्चा कर रहा है, यन्त्रों की विवेचना कर रहा है जब मानव को जिज्ञासा होती है कया मैं इसको जानकर ज्ञानत्व को प्राप्त करूँ क्योंकि मेरा ज्ञान सूक्ष्म रह जाए। मानो मैं प्रबल हो जाऊँ यह मानव की प्रवृत्ति स्वाभाविक बन जाती है। परन्तु इसी प्रकार जो क्योंकि वह परमात्मा का मानो देखो भौतिक विज्ञान बेटा! अपने परमाणुवाद से मानो विद्युत से ले करके बेटा! देखो अपना महान देखो नाना प्रकार की ..... को मानो देखो दूरी-दूरी दे करके उसका स्वभाव परिवर्तित कर सकते हैं इसी प्रकार हमारे आचार्यो ने कहा है जब हम अपने सुकृत को जान लेते हैं अपने हृदय को जान लेते हैं। हमारा हृदय कैसा है क्योंकि जितने भी योगीजन होते हैं वो हृदय में ही प्रतिष्ठित हो जाते हैं हृदय में उसकी प्रतिष्ठा हो जाती है क्योंकि हृदय एक प्रकार की आहुति देने की निर्णय लेती है। आज हमें हृदय रूपी जो अव्यत्व है मानो जो सर्वोपरि है मानो हमें इदेखो ये आहुत प्रदान करनी है हमारे आचार्यो ने बेटा! ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा है कि हमें इस वेदी को उज्ज्वल बनाना है वेदी क्या है? हृदय रूपी जो वेदी है बेटा! हमें देखो वेदीजन अपने मन और प्राण को प्रतिष्ठित कर देते हैं इसी मानव ..... के कारण ही बेटा! आत्मा को जाना जाता है क्योंकि हृदय में ही आत्मा प्रतिष्ठित रहती है। आत्मा हृदय में रहने वाली है बेटा! देखो आत्मा लोक प्रवाहाणि ..... असुतो में स्वीकार करते रहते हैं। जब हम यह विचारते हैं हमारे यहाँ आत्मवेत्ता है जोकि आप में जैसे भौतिक विज्ञानवेत्ता बेटा! परमाणुओं को सुक्रित करता रहता है। वह परमाणुओं में सुक्रित गति आती रहती है कहीं ध्रुवा गति आती है कहीं ..... गति आती है विशेष प्रकार की प्राण वाली गति आती है। उन गतियों को सम्बन्ध करने वाला एक महान मानो वैज्ञानिक बेटा! चन्द्रमा में जाने वाला यन्त्र क्या मङ्गल में जाने वाला यन्त्र क्या मानो बुध में जाने वाला यन्त्र कया इन सब यन्त्रों पर बेटा! वह एक स्थान में निश्चित करके उसके स्वभाव को परिवर्तित करता रहता है। मेरे प्यारे महानन्द जी! .....

शेष अनुपलब्ध

दिनाँक :

समय :

स्थान :

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. राष्ट्र कहते हैं जहाँ महान पुरुषों का आदर किया जाता है और दुराचारियों को दण्ड दिया जाता है।
2. धर्म उसे कहते हैं जो यर्थाथ को यर्थाथ उच्चारण करता है।
3. गौ नाम का पशु है जो हमें वह पदार्थ देता है जिससे बल और वीर्य की वृद्धि होती है।
4. यदि मानव समाज को ऊँचा बनाना है तो मेरी प्यारी माताओं को ऊँचा बनना है अपनी लज्जा को ऊँचा बनाना है।
5. रावण नाम बुद्धिमान का है रावण नाम महादानी का है।
6. राष्ट्र का नियम बनता है उच्चता से और दृढ़ता से।
7. राजा का चुनाव किया जाए तो बुद्धिमानों को करना चाहिए।
8. राजा का राष्ट्र उस काल में पवित्र होता है जब राजा के राष्ट्र में किसी भी प्राणी हनन नहीं होता है।
9. हम स्वतन्त्र उस काल में होते जब मन, वचन, कर्म से किसी प्रकार का पाप करने के लिए तत्पर नहीं होते।
10. राजा से ऊँचा समाज होता है ब्राह्मण समाज।
11. राम राज्य जब आता है तो बुद्धिमान समाज से आता है।
12. जो मानव जिसकी रक्षा रकता है, वह प्राणी उसकी रक्षा करता है।
13. वेदों में राष्ट्र का विधान धर्म की रक्षा करने के लिए राष्ट्र का निर्माण किया जाता है।
14. जो पूर्व जन्मों के संस्कार होते हैं उन सबका सम्बन्ध वायु से हमारे अन्तःकरण से और स्मृतियों से होता है।
15. इन्द्रियों पर शासन करने वाला मन है, मन को शासन में करने वाली बुद्धि है, बुद्धि को शासन में करने वाली आन्तरिक भावनाएँ हैं।
16. परमात्मा ने सबसे पूर्व प्रकाश को रचा उसके पश्चात् रात्रि को रचा।
17. वेद सब कुछ कहता है हम वेद को अपने जीवन में धारण करते चले जाएँ यही हमारा कर्त्तव्य हैं।

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली–	
स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	1000 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	600 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस अन्तरात्मा को जानने का प्रयास करें। हम आत्मवेता बन करके अपनी मानवीय धारा में ऊँचा बन जाएँ। यह न सूर्य है न चन्द्रमा है न तारामण्डल है, न अग्नि है, न शब्द है। भगवन्! प्रकाश के देने वाला आत्मा है। आत्मा के कारण ही मानव का शरीर क्रियाशील बना रहता है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव को आत्मा को जानना चाहिए आत्मवेत्ता बनने के लिए, आत्मचेतना में ही रत्त रहना चाहिए। क्योंकि जो हमारे शरीरों में भास रहा है, प्रकाशक बना हुआ है, उस प्रकाश को जानने के, प्रकाश से प्रकाशित होना चाहिए। यह कैसा अद्‌भुत जगत है, इसके ऊपर विचारना है बहुत गम्भीरता से मनन करना है। क्योंकि मनन करने वाला यह ब्रह्माण्ड है, प्रभु की जो रचना है वह बड़ी अद्‌भुत है। इसीलिए प्रभु का गुणगान गाना हमारे लिए अनिवार्य है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 48 : अंक : 571
जून 2020

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-6-2020
Published on 5th day of the same month